International Journal of Hindi Research
www.hindijournal.com
ISSN: 2455-2232
Received: 05-06-2026, Accepted: 05-07-2026, Published: 20-07-2026
Volume 12, Issue 3, 2026, Page No. 21-23

हिंदी सिनेमा में हरियाणवी भाषा का स्वरूप

भूपेंद्र[1], डॉ. शर्मिला[2]
[1] शोधार्थी, हिंदी विभाग, गुरु जम्भेश्वर विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय, हिसार, हरियाणा, भारत
[2] सहायक प्रोफेसर, हिंदी विभाग, गुरु जम्भेश्वर विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय, हिसार, हरियाणा, भारत
DOI: https://doi.org/10.66856/ijhr.2026.12.3.12183

सारांश
इस शोध पत्र में हिंदी सिनेमा क्या है तथा हरियाणवी भाषा ने हिंदी सिनेमा को किस प्रकार प्रभावित किया है इसके ऊपर चर्चा की गई है। हरियाणवी भाषाए जो पश्चिमी हिंदी की एक प्रमुख बोली हैए अपने विशिष्ट उच्चारणए लोकधुनोंए व्यंग्यात्मकता और सशक्त अभिव्यक्ति के कारण हिंदी सिनेमा में एक अलग पहचान बनाती है। पत्र मेंए हिन्दी सिनेमा में हरियाणवी भाषा के क्रमिक विकास को दर्शाने का प्रयास किया गया है कि किस प्रकार हास्य और ग्रामीण चरित्रों की साधारण बोली समय के साथ बड़े पर्दे पर ध्वनित हुई।
भारतीय समाज की भाषिक और सांस्कृति विविधता को समझने के लिए हिंदी सिनेमा एक सशक्त माध्यम है। हिंदी सिनेमा में समय. समय पर विभिन्न आंचलिक भाषाओं और बोलियों का प्रयोग किया गया है जिनमें हरियाणवी भाषा का महत्वपूर्ण स्थान है। हिंदी सिनेमा में हरियाणवी भाषा का प्रयोग न केवल भाषिक रुप में बल्कि अपने क्षेत्र विशेष के सामाजिक यथार्थ को प्रस्तुत करने के रूप में हुआ है। वर्तमान समय में हिंदी सिनेमा और संगीत के क्षेत्र में हरियाणवी का प्रयोग दिन प्रतिदिन बढ़ता जा रहा है तथा हरियाणवी भाषियों के लिए रोजगार के अवसर भी बढ़ रहे हैं। इस शोध पत्र का उद्देश्य हिन्दी सिनेमा में हरियाणवी भाषा के स्वरूप को आपके सामने रख करए पाठकों को यह बताना है कि हरियाणवी भाषा भावाभिव्यक्ति के लिए कितनी सीधीए स्पष्टए बेबाकए रोचक तथा प्रभावित करने वाली है।

मूल शब्दः हिंदी सिनेमाए हरियाणवी भाषाए भावभिव्यक्तिए हरियाणवी समाजए संस्कृतिए लोकगीतए सामाजिक यथार्थए सशक्त भाषा

भारतवर्ष में बोली जाने वाली विभिन्न बोलियों या भाषाओं में हरियाणा प्रदेश के वासियों द्वारा बोली जाने वाली प्रमुख भाषा हरियाणवी भाषा है| इसका विकास शौरसेनी अपभ्रंश की उपभाषा पश्चिमी हिंदी की आकर बहुला बोली के रूप में हुआ। प्रसिद्ध भाषाविद् "जॉर्ज ग्रियर्सन' ने इसे "बांगरू" नाम दिया है। हिंदी भाषा का इतिहास' नामक पुस्तक में भोलानाथ तिवारी जी ने हरियाणवी भाषा को हरियानी लिखा है तथा इसके विकास को इस प्रकार व्यक्त किया है. 'हरियानी का विकास उत्तरी शौरसेनी अपभ्रंश के पश्चिमी रूप से हुआ है।'[1]आगे तिवारी जी ने हरियाणवी को प्रभावित करने वाले आसपास के क्षेत्रों, इसके प्रमुख क्षेत्रों तथा इसकी प्रमुख बोलियों के बारे में कहा. 'खड़ीबोली, अहीरवाटी, मारवाड़ी, पंजाबी से घिरी इस बोली को कुछ लोग खड़ी बोली का पंजाबी से प्रभावित रूप मानते हैं। इसका क्षेत्र मोटे रूप से हरियाणाए पंजाब का कुछ भाग तथा दिल्ली का देहाती भाग है। इसकी मुख्य बोलियाँ जाटू तथा बांगरू हैं।' इसी पुस्तक में तिवारी जी ने हरियाणवी की कुछ विशेषताओं पर भी प्रकाश डाला है. 'अनेक स्थानों पर ल का ळ (काळा,माळा), एक व्यंजन के स्थान पर द्वित्व (बाब्बू, मीत्तर, गाड्डी), न काण (होणा), ड़ का ड (बडा, पेड), सहायक क्रिया हूँ, है, हैं, हो के स्थान पर ने (राम ने जाणा है) आदि इसकी कुछ मुख्य विशेषताएँ हैं।'[3]

रघुबीर सिंह मथाना एवं डॉ., बाबूराम की पुस्तक "हरियाणवी साहित्य का इतिहास' में हरियाणवी की कुछ विशेषताएं इस प्रकार हैं. 'शब्द का आरंभिक "आकार' सदैव खिंचा हुआ हो जाता है अर्थात उच्चारण खुला, मन्द एवं रूक्ष सा होता है, यथा अच्छा< "आऽऽच्छा", कल<" काऽऽलष् ए चलना < चालना नहीं < नाहीं आदि।'[4]

कारक के संदर्भ में - 'हरियाणवी में एक ही समय में एक से अधिक कारक चिह्नों का प्रयोग भी होता है, यथा टांड पै तै जेली तार् ल्या।'[5] 'हरियाणवी में अपादान को व्यक्त करने के लिए "से" के स्थान पर "ते' का प्रयोग मिलता है, यथा मेरे से झ मेरे तेझ मेरे धोरे ते लिया आदि।"[6]

हिंदी सिनेमा से अभिप्राय उस उद्योग से है जो हिंदी भाषा में फिल्म बनाने का काम करता है। इसे बॉलीवुड के नाम से भी जाना जाता है। बॉलीवुड नाम अंग्रेजी सिनेमा उद्योग हॉलीवुड के तर्ज़ पर रखा गया है। बॉलीवुड फिल्में हिंदुस्तानए पाकिस्तान और विष्व के कई देशों के लोगों के दिलों की धड़कन है। बॉलीवुड की शुरुआती दौर की फिल्मों में हरियाणवी भाषा का प्रयोग बहुत ही कम या न के बराबर हुआ करता था। 1980 और 1990 के दशक की फिल्मों में हरियाणवी बोलने वाले पात्रों को अनपढ़, गुस्सैल तथा मज़ाकिया दिखाया जाता था। इसके पश्चात भी लगभग दो-तीन दशकों तक यही हाल रहा। परंतु पिछले दशक से हिंदी सिनेमा में हरियाणवी भाषा के प्रयोग में अचानक बहुत सुधार देखने को मिला है। पिछले दशक की काफी फिल्मों में हरियाणवी भाषा का खुलकर प्रयोग किया गया है। "दंगल", "सुलतान", "तनु वेड्स मनु रिटर्न्स", "लाल रंग" इत्यादि फिल्में इसका प्रबल उदाहरण हैं। इन फिल्मों के संवादों को सुनने से हरियाणवी भाषा के प्रति गर्व की भावना का अनुभव होता है। यहां हरियाणवी को एक सशक्त और स्वाभिमानी भाषा के रूप में पहचान मिलती है क्योंकि अब हरियाणवी भाषा के लिए पात्रों का चयन अनपढ़ए गुस्सैल या मज़ाकिया के रूप में नहीं बल्कि पढ़े लिखेए समझदार तथा शील स्वाभाविक रूपों में होने लगा। जहां पहले की फिल्मों में यह भाषा मुख्य पात्र के सहायक पात्रों या हास्य कलाकारों द्वारा बोली जाती थी वहीं पिछले दशक की फिल्मों में इसने मुख्य पात्रों या नायक. नायिकाओं के कथनों की शोभा बढ़ाई तथा खुद को नायकत्व की भाषा के रूप में स्थापित किया। 'समकालीन समय में हरियाणा एक नया और उभरता हुआ राज्य बनकर उभरा है जो देशवासियों और फिल्म निर्माताओं को आकर्षित करने की अधिक संभावना रखता है।'[7]

सलमान खान अभिनीत फिल्म 'सुलतान' में हरियाणवी भाषा का प्रयोग केवल संवाद अदायगी तक सीमित नहीं थाय बल्कि यह पात्र की मिट्टी से जुड़ी पहचान का हिस्सा था। फिल्म में हरियाणवी भाषा के माध्यम से हरियाणा के एक प्रसिद्ध खेल" "कुश्ती" जो कि हरियाणा का राजकीय खेल है के प्रति इस प्रदेश

के वासियों में कैसा जुनून है तथा ओलंपिक खेलों में इस खेल से पदक लाना एक पहलवान के लिए कितना महत्वपूर्ण होता है इसकी अभिव्यक्ति की गई है। नायिका का किरदार निभा रही अनुष्का शर्मा नायक के किरदार में सलमान खान से पूछती है' लाइफ में तूं क्या करणा चाहता है ?! "" तब सलमान खान कहते हैं कि' अगले ओलंपिक्स में मैं हिंदुस्ताण को पहलवानी में मैडल दिलाऊंगा वो भी सोणे (सोने) का।"" फिल्म में कुश्ती के खेल में लगाए जाने वाले दांव तथा सही दांव से खेल को जीतना के माध्यम से यह समझाने का प्रयास किया गया है कि जीवन में आने वाली परेशानियों को भी उचित दांव के प्रयोग से दूर किया जा सकता है। सलमान खान का एक कथन देखिए' असली पहलवान की पहचान अखाड़े में नहीं जिंदगी मै होवै है ताकि जब जिंदगी जब तुम्हें पटके तो तुम फिर खड़े हो और ऐसा दांव मारो कि जिंदगी चित्त हो जाए ।'

इसके पश्चात् हम 'दंगल' फिल्म पर चर्चा कर सकते हैं। आमिर खान की 'दंगल' ने भाषाई यथार्थवाद के स्तर को एक पायदान और ऊपर पहुँचाया। इस फिल्म के लिए कलाकारों ने महीनों तक हरियाणवी लहजे का प्रशिक्षण लिया। फिल्म में "छोरी', "थारे', "म्हारी' जैसे शब्दों का प्रयोग कृत्रिम नहीं लगा। आमिर खान द्वारा बोला गया संवाद— "म्हारी छोरियां छोरों से कम हैं के?"— एक वैष्विक स्लोगन बन गया। फिल्म ने दिखाया कि हरियाणवी केवल एक कठोर भाषा नहीं है; बल्कि इसमें गहरा वात्सल्य और अनुशासन भी छिपा है। पिता पुत्री के संबंधों के बीच जो भाषाई संवाद बुने गए, उन्होंने दर्शकों को इस भाषा की भावनात्मक गहराई से परिचित कराया। जब गीता और बबिता अपनी हम उम्र के दो लड़कों की खूब पिटाई कर देती है तब घर पर लड़कों की मां उलाहना लेकर आती है, तब गीता अपनी बात इस प्रकार रखती है' शुरुआत इन्नै करी थी पापा, मन्नै कुतिया कह रह्या था बबीता नै कमीनी, हमनै भी धर दिए दो चार।' पिता द्वारा पुत्रियों को पहलवान बनाने के लिए नित्य प्रतिदिन के सख्त नियमों से परेशान लड़कियों की विवशता प्रस्तुत गाने के माध्यम से बहुत ही व्यंग्यपूर्ण अभिव्यक्त हुई है' बापू सेहत के लिए तूं तो हानिकारक है३. हमपे थोड़ी दया तो करो हम नन्हे बालक हैं।'

इन दोनों फिल्मों से पहले, हिंदी सिनेमा में हरियाणवी बोलने वाले पात्र को अक्सर "मूर्ख' या "अति आक्रामक' दिखाया जाता था। लेकिन "सुल्तान' और "दंगल' ने हरियाणवी को अनुशासन की भाषा बनाया खेल और कुश्ती के माध्यम से इसे मेहनत और पसीने की भाषा के रूप में पेश किया गया। पहली बार बड़े पर्दे पर हरियाणवी भाषी ग्रामीण पिता को अपनी बेटियों के सपनों के लिए लड़ते दिखाया गया जिससे इस भाषा के प्रति सामाजिक दृष्टिकोण बदला तथा यह सशक्तिकरण की भाषा के रूप में विकसित हुई। इन फिल्मों की सफलता ने बॉलीवुड के निर्माताओं को यह विष्वास दिलाया कि क्षेत्रीय पुट वाली फिल्में केवल उस क्षेत्र विशेष तक सीमित नहीं रहतीं। यदि कहानी दमदार हो तो "हरियाणवी' लहजा फिल्म की "यूएसपी' (USP) बन सकता है। "सुलतान' और "दंगल' ने हरियाणवी को सिनेमाई हाशिये से निकालकर "पोस्टर बॉय' बना दिया। इन फिल्मों ने यह स्पष्ट कर दिया कि हरियाणवी भाषा में जो "ठसक' और "अकड़' है, वह नकारात्मक नहींय बल्कि आत्म सम्मान का प्रतीक है। आज यदि कोई युवा बड़े पर्दे पर हरियाणवी बोलता है तो उसे उपहास की दृष्टि से नहींय बल्कि एक "धाक्कड़' व्यक्तित्व के रूप में देखा जाता है।

इसके अतिरिक्त फिल्म 'तनु वेड्स मनु रिटर्न्स' पर नज़र डालना भी आवश्यक है। हिन्दी सिनेमा में हरियाणवी भाषा के विकास की चर्चा तब तक अधूरी है, जब तक इसमें "तनु वेड्स मनु' (2015) की "दत्तो' (कुसुम सांगवान) के किरदार का विश्लेषण न किया जाए। कंगना रनौत द्वारा निभाया गया यह किरदार केवल एक फिल्म का पात्र नहीं थाय बल्कि यह हरियाणवी महिलाओं के प्रति सिनेमाई और सामाजिक दृष्टिकोण में एक "पैराडाइम शिफ्ट' (बड़ा बदलाव) था। इससे पहले की फिल्मों में हरियाणवी महिला को अक्सर घूंघट में, दबी-कुचली या बिना किसी निजी राय वाली महिला के रूप में दिखाया जाता था। लेकिन "दत्तो' के रूप में दर्शकों ने एक ऐसी लड़की को देखा जो दिल्ली विश्वविद्यालय के रामजस कॉलेज में पढ़ती है, एक राष्ट्रीय स्तर की एथलीट है तथा अपनी भाषा और जड़ों को लेकर जरा भी शर्मिंदा नहीं है। दत्तो का किरदार इसलिए लोकप्रिय हुआ क्योंकि उसके संवाद स्पष्ट तथा बेबाकी थे। नायक की भूमिका निभा रहे "आर माधवन" जब दत्तो से मिलने तथा अपनी भ्रांति दूर करने के लिए दत्तो के पास जाते हैं तब दत्तो की बेबाकी स्पष्ट रूप से देखी जा सकती है - 'थारी लगाई लागी तो म्हारे जिसी पर मैं थारी लगाई ना सूं, म्हारा नाम है कमारी (कुमारी) कुसुम सांगवान यो म्हारी सहेली पिंकी हम रामजस कालेज दिल्ली यूनिवर्सिटी मै पढ़ूं सूं स्पोर्ट्स कोटे तै एडमिशन लिया नेशनल लेवल की एथलीट सूं जिला झज्झर 124507 अर फोन नंबर मैं दऊं कोना।' हालांकि फिल्म में प्रयुक्त हरियाणवी भाषा के संवाद ठीक हरियाणवी लहज़े के बिना बनावटी लग रहे हैं परंतु फिर भी वह "खड़खड़ी' (कठोर और स्पष्ट) हरियाणवी का प्रयोग करती है जो सुनने में तीखी लेकिन स्वभाव में ईमानदार है। उसका मशहूर संवाद— "कंधे झुक गए हैं तेरे, पर अकड़ नहीं गई"—यह दर्शाता है कि हरियाणवी लहजा केवल पुरुषों के शौर्य का नहींय बल्कि महिलाओं की तार्किक क्षमता और उनके आत्मसम्मान का भी माध्यम है। दत्तो का चरित्र यह स्थापित करता है कि अंग्रेजी या शुद्ध हिन्दी बोलने वाला व्यक्ति ही आधुनिक नहीं होता। एक लड़की अपनी देसी बोली बोलकर भी उतनी ही प्रगतिशीलए बुद्धिमान और निडर हो सकती है। फिल्म में जब वह अपनी भाषा में अपनी बात रखती है तो वह शहरी पात्रों पर भारी पड़ती दिखाई देती है। इसने यह संदेश दिया कि हरियाणवी भाषा में जो "अकड़' है, वह उसकी मजबूती है, कमजोरी नहीं। इसी फिल्म के बाद "धाक्कड़' शब्द पूरे भारत में लोकप्रिय हुआ। दत्तो के माध्यम से सिनेमा ने यह दिखाया कि हरियाणा की लड़कियां न केवल अपनी संस्कृति को संजोए हुए हैं; बल्कि वे आधुनिक चुनौतियों का सामना करने के लिए भी पूरी तरह तैयार हैं। भाषाई विश्लेषण की दृष्टि से देखें तो दत्तो के संवादों में 'हरियाणवी-हिन्दी' का एक ऐसा संतुलन था जिसे गैर-हरियाणवी दर्शकों ने भी सहजता से अपनाया। इसने बॉलीवुड के लिए "महिला-प्रधान' क्षेत्रीय कहानियों के नए द्वार खोल दिए।

हरियाणवी भाषा को हिंदी सिनेमा तक ले जाने में संगीत का भी अहम योगदान है। सिनेमा में किसी भी भाषा की स्वीकार्यता तब सबसे अधिक बढ़ जाती है जब वह संगीत के माध्यम से लोगों के कानों तक पहुँचती है। हरियाणवी भाषा के साथ भी यही हुआ। पिछले कुछ वर्षों में हरियाणा के 'लोक संगीत' (Folk Music) और 'पॉप संगीत' (Pop Music) ने बॉलीवुड के गानों का व्याकरण बदल दिया है। हरियाणा का पारंपरिक संगीत अपनी श्रागनी' और 'सांग' शैली के लिए जाना जाता है जिसमें शब्दों की स्पष्टता और ऊर्जा मुख्य होती है। बॉलीवुड ने इस ऊर्जा को पहचाना। फिल्म 'तनु वेड्स मनु रिटर्न्स' का गाना "बन्नो तेरा स्वैगर" इसका बेहतरीन उदाहरण है। इस गाने में पारंपरिक राजस्थानी और हरियाणवी पुट के साथ 'स्वैगर' जैसे आधुनिक शब्द का मेल किया गयाए जिसने हरियाणवी शब्दावली को युवाओं के बीच लोकप्रिय बना दिया। फिल्म 'दंगल' का शीर्षक गीत या "धाक्कड़" गाना केवल मनोरंजन नहीं थाए बल्कि वह हरियाणवी मर्दानगी और नारी शक्ति का संगीत के माध्यम से किया गया चित्रण था। जब अमिताभ भट्टाचार्य जैसे गीतकार ने "ऐसी धाक्कड़ है" जैसे शब्दों का प्रयोग किया तो "धाक्कड़" शब्द एक क्षेत्रीय शब्द से बदलकर 'एटीट्यूड' (Attitude) का वैश्विक पर्याय बन गया। हाल के वर्षों में हरियाणा के स्थानीय

कलाकारों (जैसे सुमित गोस्वामी, फाजिलपुरिया) के गानों को बॉलीवुड में स्थान मिला है। 'कपूर एंड संसश् में "लड़की ब्यूटीफुल कर गई चुल" गाने ने 'चुल' (Chull) शब्द को पूरे भारत की ज़ुबान पर चढ़ा दिया। यूट्यूब और रील कल्चर ने 'गजबण पाणी नै चाली' या '52 गज का दामण' जैसे गानों को जो लोकप्रियता दी, उसका प्रभाव यह हुआ कि अब बड़े-बड़े फिल्म निर्माता अपनी फिल्मों में एक 'हरियाणवी टच' वाला गाना रखना आवश्यक समझने लगे हैं। हरियाणवी संगीत की विशेषता उसकी 'खड़ी बोली' है। जहाँ उर्दू या हिंदी के गाने नज़ाकत के लिए जाने जाते हैं, वहीं हरियाणवी गाने अपनी बेबाकी और स्पष्टवादिता के लिए प्रसिद्ध हैं। फिल्मों में जब नायक या नायिका इन गानों पर थिरकते हैं तो वह इस भाषा के प्रति दर्शकों के मन में बैठे 'कठोरपन' के डर को निकालकर उसे 'उत्सव' की भाषा बना देता है। फिल्मों के बैकग्राउंड म्यूज़िक में अब 'नगाड़ा', 'बीन' और 'घड़वा" जैसे वाद्य यंत्रों का प्रयोग बढ़ा है जो हरियाणा की मिट्टी की सोंधी महक को सिनेमा हॉल तक पहुँचाता है। यह भाषाई और सांस्कृतिक रूप से दर्शकों को उस परिवेश से जोड़ता है। फिल्म 'लाल रंग" के सुप्रसि गाने "तेरे पै मैं कर द्यूं खर्च करोड़"" में 'घड़वे" की आवाज़ जब कानों में पड़ती है तो रोंगटे खड़े हो जाते हैं।

जहाँ एक ओर 'दंगल' और 'सुल्तान' जैसी फिल्मों ने हरियाणवी भाषा को गौरव और खेल से जोड़ाए वहीं दूसरी ओर 'NH10' और 'गुड़गांव' जैसी फिल्मों ने इस भाषा के उस पक्ष को उजागर किया जो सामाजिक विसंगतियोंए पितृसत्ता (Patriarchy) और व्यवस्था के प्रति विद्रोह से जुड़ा है। शोध की दृष्टि से यह समझना आवश्यक है कि भाषा केवल उत्सव का साधन नहीं, बल्कि यथार्थ का आईना भी है। अनुष्का शर्मा अभिनीत फिल्म 'NH10' में हरियाणवी भाषा का प्रयोग एक अलग स्तर पर किया गया। यहाँ भाषा की 'कठोरता' (Roughness) को एक डर पैदा करने वाले उपकरण के रूप में इस्तेमाल किया गया। फिल्म में जब पात्र हरियाणवी में बात करते हैं तो उनकी बोली में 'खाप' और 'परंपरा' के नाम पर होने वाली हिंसा की गूँज सुनाई देती है। यह फिल्म दिखाती है कि कैसे शहर के करीब होते हुए भी भाषाई और वैचारिक रूप से हरियाणा का ग्रामीण अंचल अपनी जड़ों से जुड़ा हैए जहाँ भाषा का लहजा ही सत्ता और शक्ति का प्रतीक है। हरियाणवी को अक्सर 'लट्ठमार' भाषा कहा जाता है। इन यथार्थवादी फिल्मों ने इस विशेषण को सकारात्मक या नकारात्मक न मानकर 'यथार्थपरक' माना। जब कोई खलनायक हरियाणवी में धमकी देता है तो वह भाषा की ध्वनि और लहजे के कारण अधिक प्रभावशाली और डरावनी लगती है। यह फिल्म निर्माताओं की उस कला को दर्शाता है जहाँ वे भाषा के 'ध्वनि विज्ञान' (Phonetics) का उपयोग फिल्म के माहौल को बनाने में करते हैं।

भाषा केवल विचारों का ही आदान - प्रदान नहीं करती अपितु इससे बोलने वाले की संस्कृतिए समाज, रहन - सहन तथा व्यक्तित्व आदि का भी काफ़ी हद तक पता लग जाता है। किसी भी व्यक्ति के बोलने के लहज़े से उसके निवास क्षेत्र का अंदाज़ा बड़ी आसानी से लगाया जा सकता है। किन्हीं दो या दो से अधिक व्यक्तियों की भाषा यदि एक ही है और यह पता लगाना हो की व्यक्ति भिन्न - भिन्न स्थानों से हैं या एक ही स्थान से तब भाषा एक होते हुए भी उनका लहज़ा बड़ी आसानी से उन्हें वर्गीकृत कर देगा। लहज़ा ही वह शक्ति है जिससे किसी भी भाषा के क्षेत्र विशेष का परिचय मिलता है। क्षेत्र में परिवर्तन के साथ - साथ भाषा के लहज़े में भी पर्याप्त भिन्नता देखने को मिलती है। यही कारण है कि हरियाणवी भाषा भी अपने क्षेत्रों के अनुसार विभिन्न बोलियों यथा - देशवाली, बागड़ी, बांगरु, अहिरवाटी, मेवाती इत्यादि में बंटी हुई है। यद्यपि हिंदी सिनेमा में हरियाणवी भाषा का प्रचार काफ़ी बढ़ रहा है तथा इसके कारण हरियाणा प्रदेश के वासियों को अपनी भाषा के प्रति गर्व का अनुभव होता है परंतु हिन्दी सिनेमा अभी तक हरियाणवी भाषा के किसी भी लहज़े को ठीक - ठीक प्रयोग में नहीं ला पाया है। यही कारण है कि इन फिल्मों में प्रयुक्त हरियाणवी काफ़ी जगह बनावटी लगने लगती है। इसके पीछे सबसे प्रमुख कारण है क्षेत्र विशेष के लहज़े का प्रभाव। हर व्यक्ति के बोलने का लहज़ा क्षेत्र विशेष से प्रभावित होता है और यही कारण है कि भारतीय अंग्रेजी तथा ब्रिटिश अंग्रेजी के लहज़े में भी दिन - रात का अंतर है। जब भारत का व्यक्ति अंग्रेजी बोलता है तब वह अंग्रेजी का हिंदीकरण कर देता है तथा जब ब्रिटिश लोग हिंदी बोलते हैं तो हिंदी का अंग्रेजीकरण हो जाता है। इसी प्रकार जब हिंदी सिनेमा में मूल रूप से हिंदी बोलने वाले अभिनाताओं से हरियाणवी बुलवाई गई तब हरियाणवी का भी हिंदीकरण हो गया। हालांकि कुछ अभिनेता जो कहीं न कहीं हरियाणा से जुड़े हुए हैं उनके हरियाणवी के लहज़े में वास्तविकता दिखाई देती है न कि बनावटीपन। फिल्म "लाल रंग" में रणदीप हुड्डा जो की मूल रूप से हरियाणा के निवासी हैं उनकी हरियाणवी "तनु वेड्स मनु रिटर्न्स" की कंगना रनौत, "सुलतान" के सलमान खान, "दंगल" के आमिर खान इत्यादि की तरह बनावटी नहीं है। इस प्रकार कहा जा सकता है कि हिंदी सिनेमा में हरियाणवी भाषा का प्रयोग तो खूब हो रहा है परंतु अब उसके लहज़े पर काम करने की आवश्यकता है ताकि भाषा की मर्यादा बनी रहे।

प्रस्तुत शोध पत्र के विश्लेषण से यह स्पष्ट होता है कि हिन्दी सिनेमा में हरियाणवी भाषा का सफर केवल शब्दों का बदलाव नहीं, बल्कि एक सांस्कृतिक पुनर्जागरण है। जो भाषा कभी फिल्मों में केवल हास्य के पात्रों या क्रूर खलनायकों तक सीमित थी, आज वह नायकत्व, स्वाभिमान और महिला सशक्तिकरण की पहचान बन चुकी है। 'दंगल', 'सुल्तान' और 'तनु वेड्स मनु रिटर्न्सश् जैसी फिल्मों ने यह सिद्ध कर दिया कि दर्शक अब भाषाई विविधता को स्वीकार करने के लिए तैयार हैं, बशर्ते उसे ईमानदारी और गहराई के साथ पेश किया जाए। हरियाणवी भाषा की 'ठसक' और उसके 'लठ्ठमार' लहजे को अब नकारात्मकता के बजाय एक विशिष्ट 'एटीट्यूड' के रूप में देखा जाता है। हालांकिए सिनेमा के सामने अभी भी यह चुनौती है कि वह हरियाणवी परिवेश को केवल कुश्तीए अपराध या ऑनर किलिंग तक ही सीमित न रखे, बल्कि इसके अन्य मानवीय और बौद्धिक पहलुओं को भी उजागर करे। अंततः बॉलीवुड में हरियाणवी का बढ़ता प्रभाव भारतीय सिनेमा के लोकतांत्रिक होने का प्रमाण है, जहाँ क्षेत्रीय अस्मिताएं मुख्यधारा के साथ कंधे से कंधा मिलाकर खड़ी हैं।

संदर्भ

1. तिवारी, भोलानाथ. (2022) हिंदी भाषा का इतिहास. वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली. पृ० सं० 87
2. पूर्ववत्
3. पूर्ववत्
4. मथानाए रघुबीर सिंह, बाबूराम. (2004). हरियाणवी साहित्य का इतिहास. लक्ष्मण साहित्य प्रकाशन, रोहतक. पृ० सं० 14
5. पूर्ववत्, पृ० सं० 15
6. पूर्ववत्
7. www.hindutantimes.com,bollywood,“from sultan to dangal: bollywood get a Haryanvi tadka”, by Naina Arora, 24th april 2016.